# एलेक्ज़ेंडर की सैर

पामेला एलेन

अनुवादः मुकेश

# एलेक्ज़ेंडर की सैर

# एलेक्ज़ेंडर की सैर

पामेला एलेन
अनुवाद: मुकेश

एलेक्ज़ेंडर अपनी माँ और अपने चार भाई-बहनों के साथ सिडनी की सबसे खूबसूरत जगह पर रहता था, लेकिन एलेक्ज़ेंडर की माँ उस जगह से ऊब चुकी थी।

इसलिए एक सुनहरी धूप भरी सुबह को रोमांच की तलाश में वे सब चल दिये।

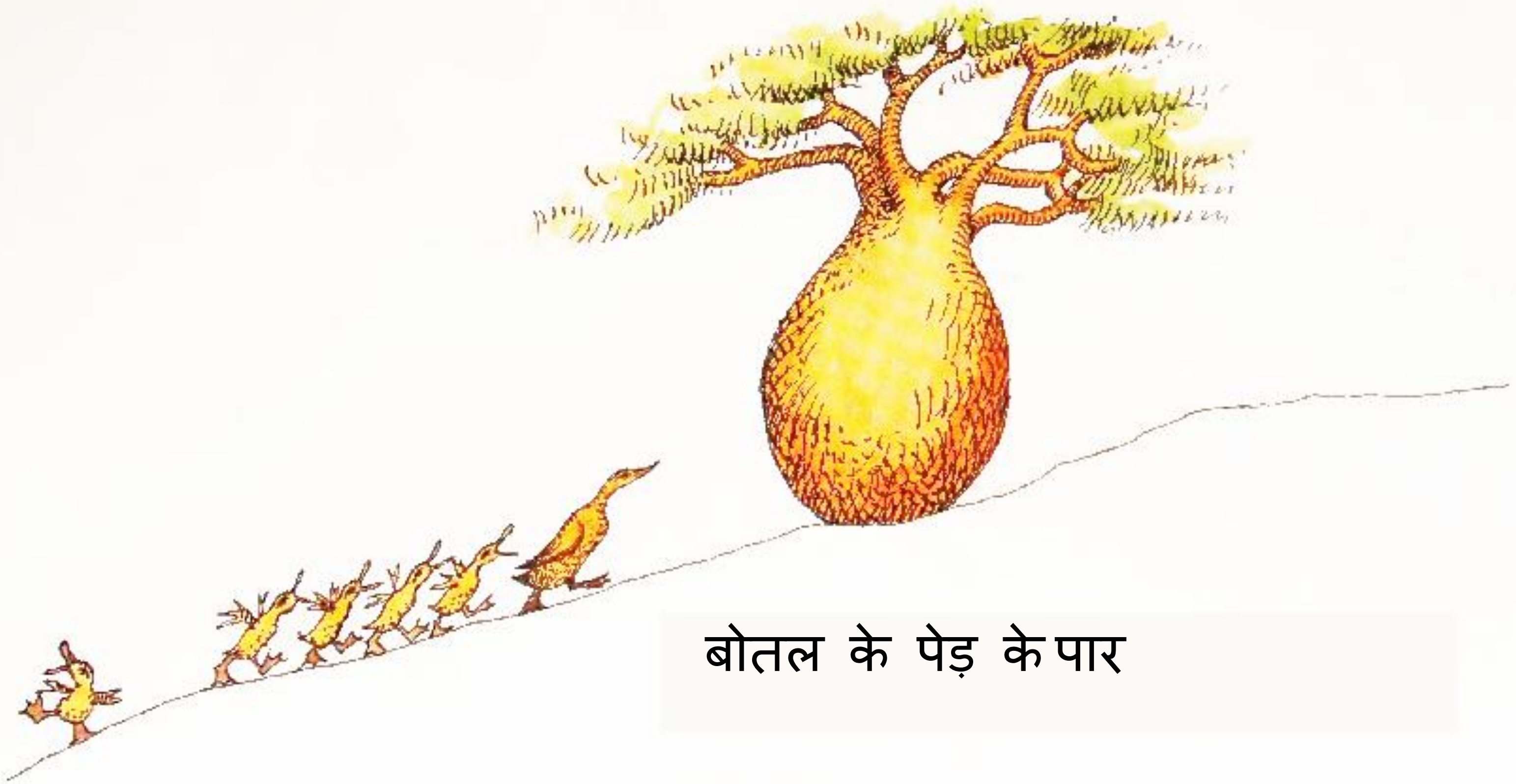

बोतल के पेड़ के पार

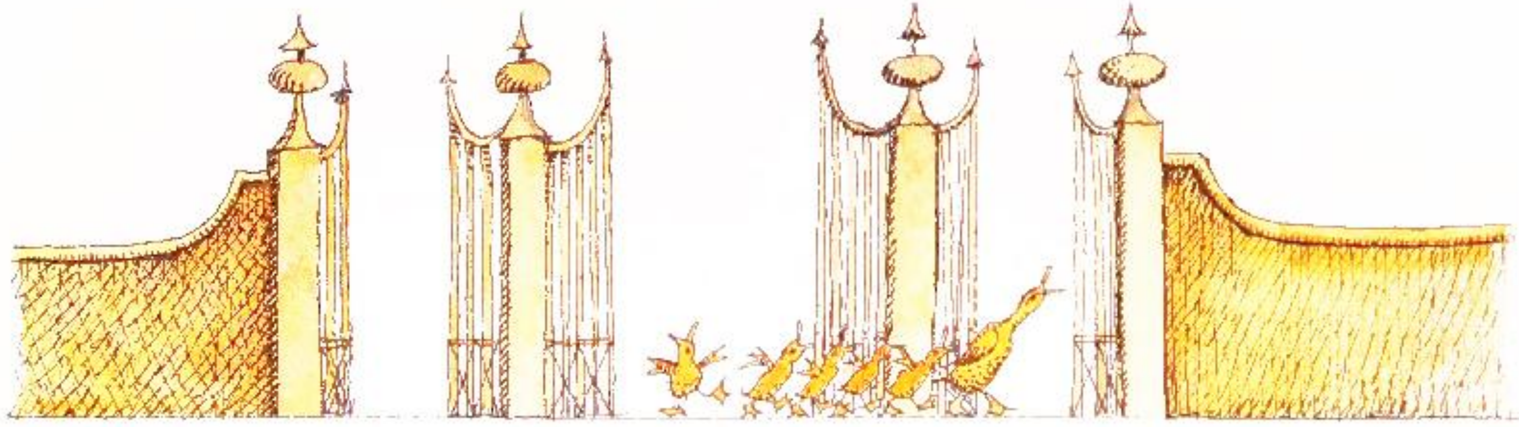

लोहे के दरवाजे से निकल कर,

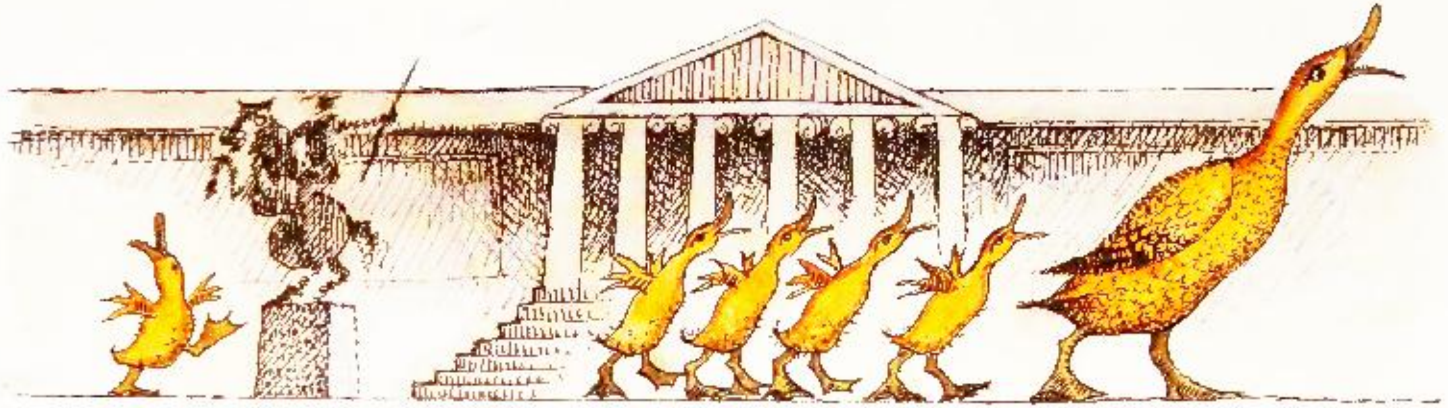

आर्ट गैलरी रोड पर चल दिए।

एलेक्ज़ेंडर की माँ ने कहा "क्वेक, क्वेक, साथ रहो, सावधान रहो"। लेकिन एलेक्ज़ेंडर ना ही साथ रहा और ना ही वह सावधान रहा। वह सिर ऊपर उठाए बेफिक्री से धीरे धीरे पीछे चलता रहा।

“कॉलेज स्ट्रीट” में एक आदमी दौड़कर आया और उसने ट्रैफ़िक रोक दिया।

एलेक्ज़ेंडर की माँ ने कहा “क्वेक, क्वेक, साथ रहो, सावधान रहो”। लेकिन एलेक्ज़ेंडर ना ही साथ रहा और ना ही वह सावधान रहा। उसने अपनी माँ को सुना ही नहीं और धीरे धीरे चलता रहा।

जब तक वे दूसरी तरफ पहुँचे, एलेक्ज़ेंडर गायब हो चुका था।

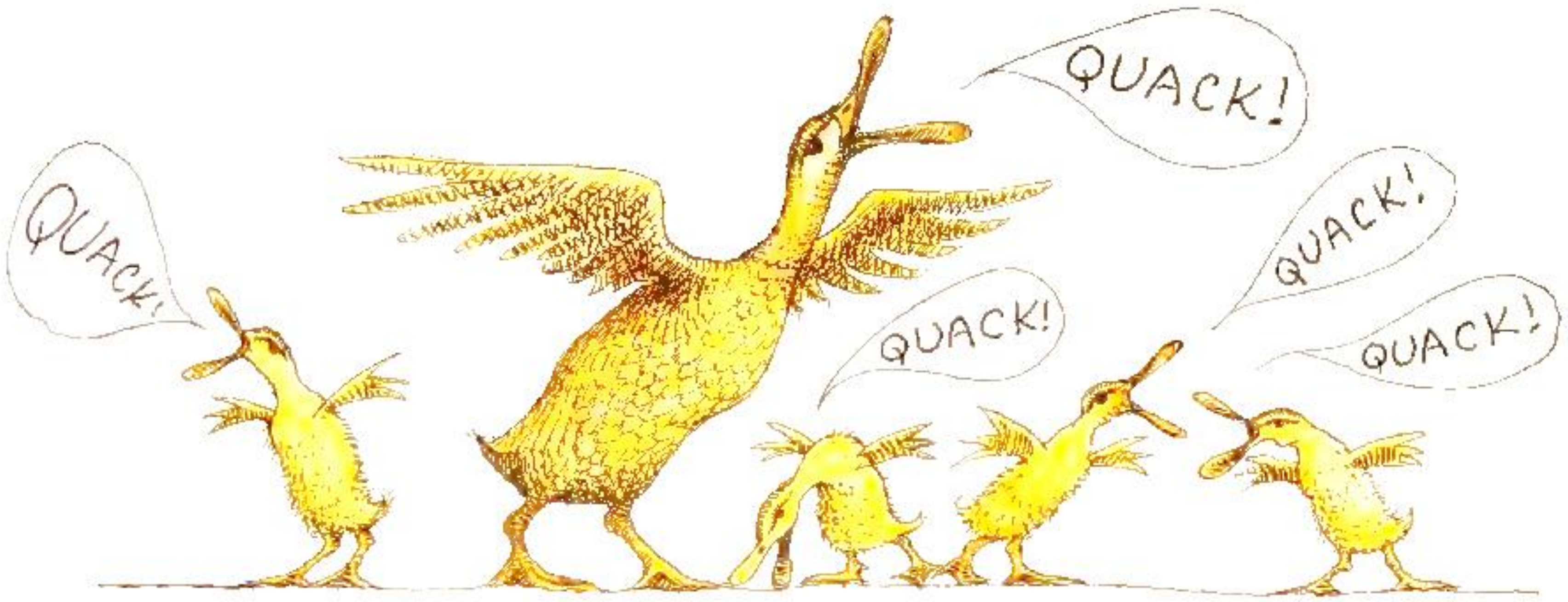


एलेक्ज़ेंडर की माँ पुकारती रही, क्वेक, क्वेक करती रही ‘एलेक्ज़ेंडर! एलेक्ज़ेंडर!’ और उसके सभी भाई-बहन भी पंख फड़फड़ाते हुए बार बार पुकारते रहे क्वेक, क्वेक, लेकिन एलेक्ज़ेंडर कहीं नहीं मिला।

जब उन्होंने शोर मचाना बंद कर दिया, तो उन्हें धरती के नीचे से एक धीमी और दूर से आती 'क्वेक, क्वेक!' की आवाज़ सुनाई दी।

एक युवक और एक अधेड़ उम्र की महिला यह देखने आए कि क्या हो रहा है।

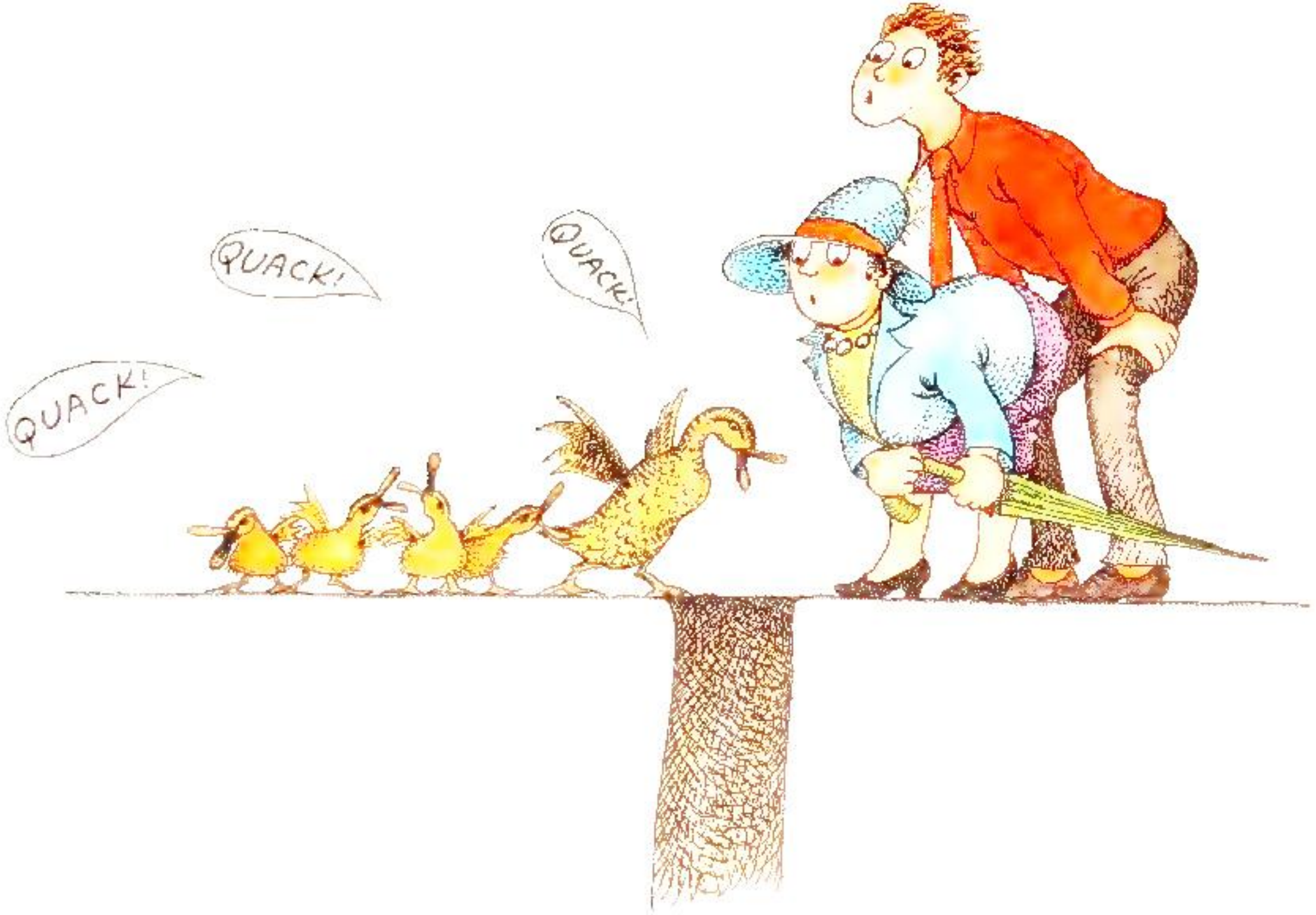

युवक ने अपनी लंबी बांह से एलेक्ज़ेंडर तक पहुँचने की कोशिश की, लेकिन उसकी लंबी बांह पर्याप्त लंबी नहीं थीं।

अधेड़ उम्र की महिला के पास एक छाता था। इसलिए युवक ने अपनी लंबी बांह और छाते से फिर कोशिश की, लेकिन वे भी पर्याप्त लंबी नहीं थीं।

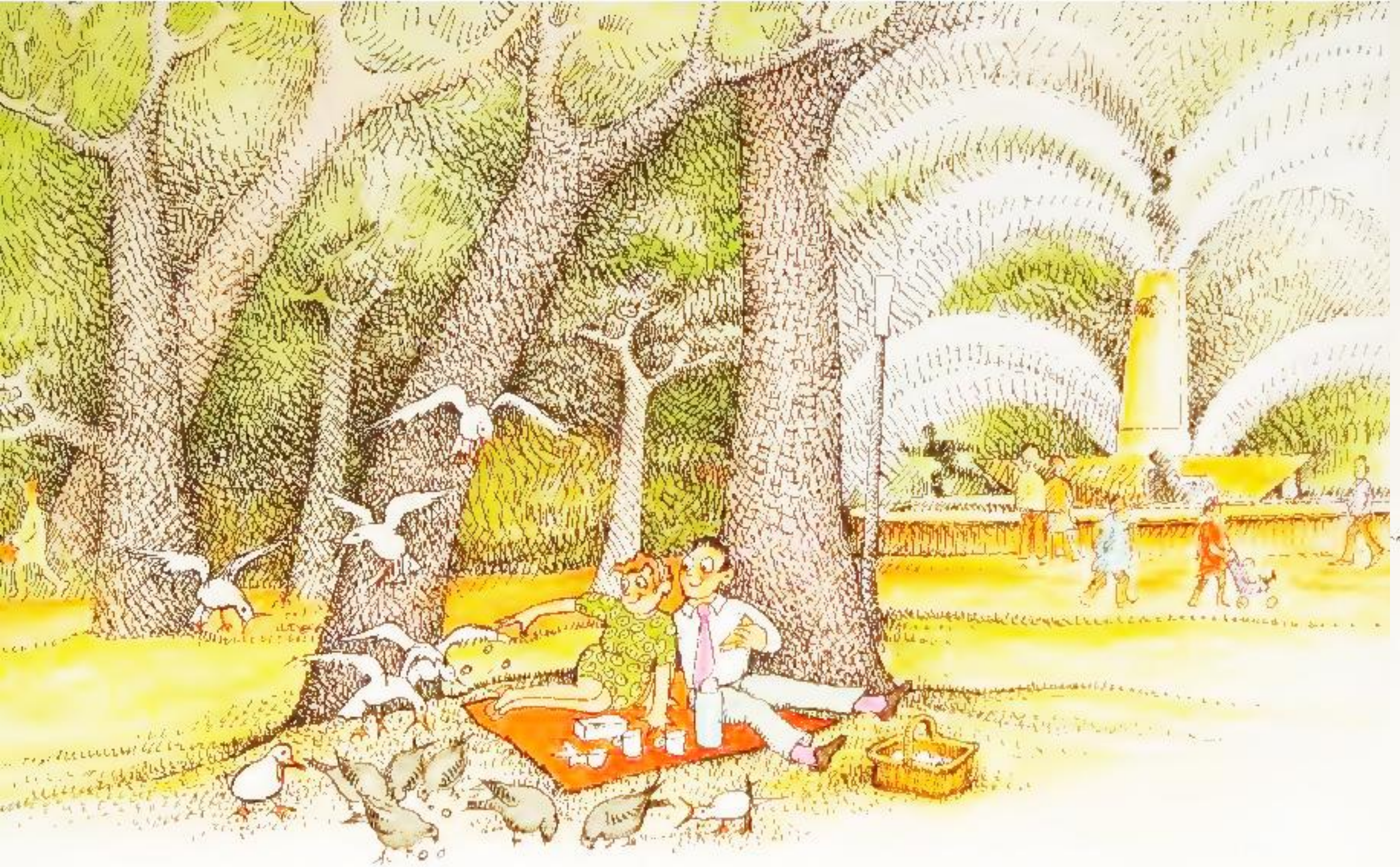

‘हाइड पार्क’ में पिकनिक मना रहे एक युवा जोड़े ने जब यह शोर-शराबा सुना, तो उन्होंने अपनी टोकरी समेटी और यह देखने के लिए वहाँ आ गए कि आखिर यह सब हंगामा किस बात का है।

अधेड़ उम्र की महिला ने पूछा, “हम इसे कैसे बाहर निकालेंगे?” युवा जोड़े को भी कुछ समझ नहीं आया कि क्या किया जाये। उन्होंने एक आधा खाया हुआ चीज़ सैंडविच गड्ढे में फेंक दिया और पुकारा “खुश रहो”।

एक पुलिसवाला आया। उसे ठीक-ठीक पता था कि क्या करना है। उसने एक लंबी रस्सी के सिरे पर अपनी सीटी बाँध कर गड्ढे में डाल दी और चिल्लाया “लो, इसे पकड़ो!”

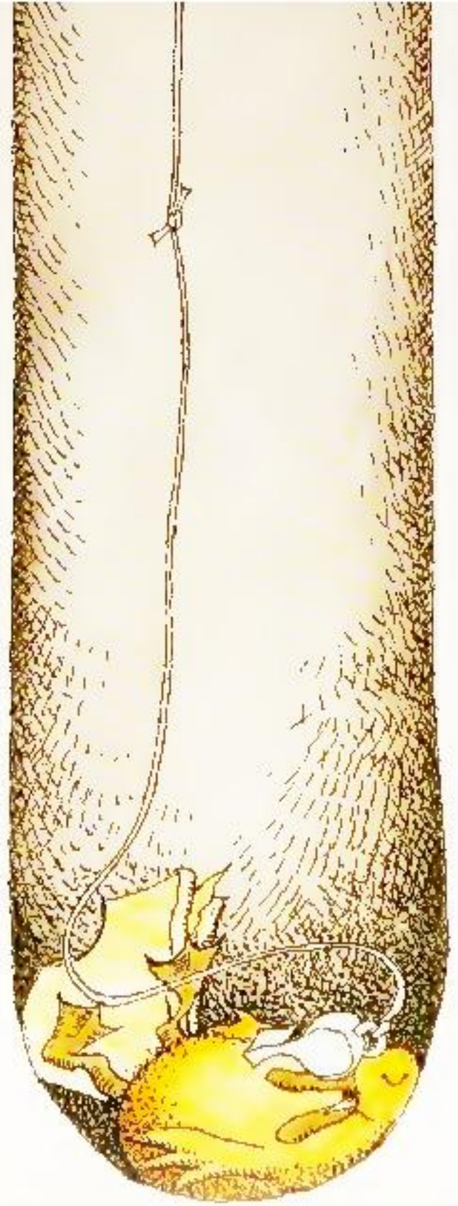

लेकिन एलेक्ज़ेंडर ने नहीं पकड़ा।
एलेक्ज़ेंडर ने सुना ही नहीं।

एक छोटा लड़का और उसकी माँ भीड़ में शामिल हो गए। गड्ढे की गहराई से एक कमज़ोर सी ‘क्वैक!’ की आवाज़ आई। वे उसे कैसे बाहर निकालेंगे?

फिर इससे पहले कि कोई रोक पाता, उस छोटे लड़के ने अपनी बोतल का पानी गड्ढे में उड़ेल दिया। 'ओह! अब तुम गए काम से! तुमने उस बेचारे छोटे से शैतान को डुबो दिया,' लंबी भुजाओं वाला युवक चिल्लाया।

और वे सभी उस गहरे अंधेरे गड्ढे में झाँककर देखने की कोशिश करने लगे

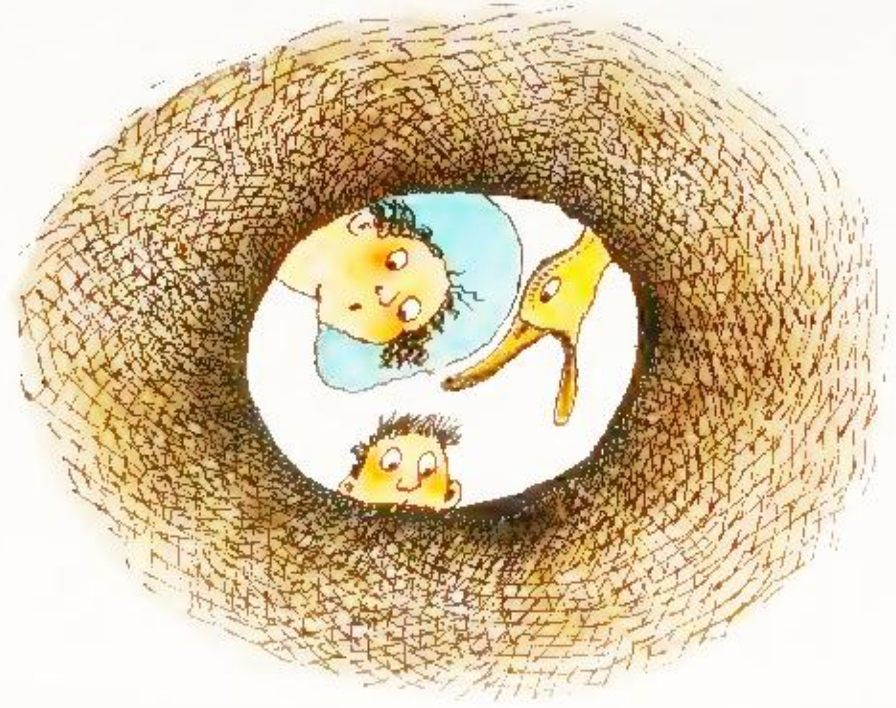

और एक साथ बातें करने लगे। वे सभी एलेक्ज़ेंडर को बचाना चाहते थे, लेकिन वे ऐसा कैसे करते?

पिकनिक मनाने वाले युवाओं ने अपनी टोकरी से दो कप, दो प्लास्टिक बैग, एक लंच बॉक्स और एक थर्मस फ्लास्क निकाला। छोटा लड़का अभी भी अपनी खाली बोतल पकड़े हुए था।

फिर, बत्तखों समेत, वे सब एक लम्बी सर्पीली कतार में ‘आर्च बाल्ड’ फव्वारे की ओर बढ़े।

अब वे सब बत्तखों समेत उछलते कूदते,
छलांगे लगाते क्वेक, क्वेक करते फड़फड़ाते,

पानी छलकाते, फव्वारे से गड्ढे तक
और वापस नाचते कूदते भागने लगे।

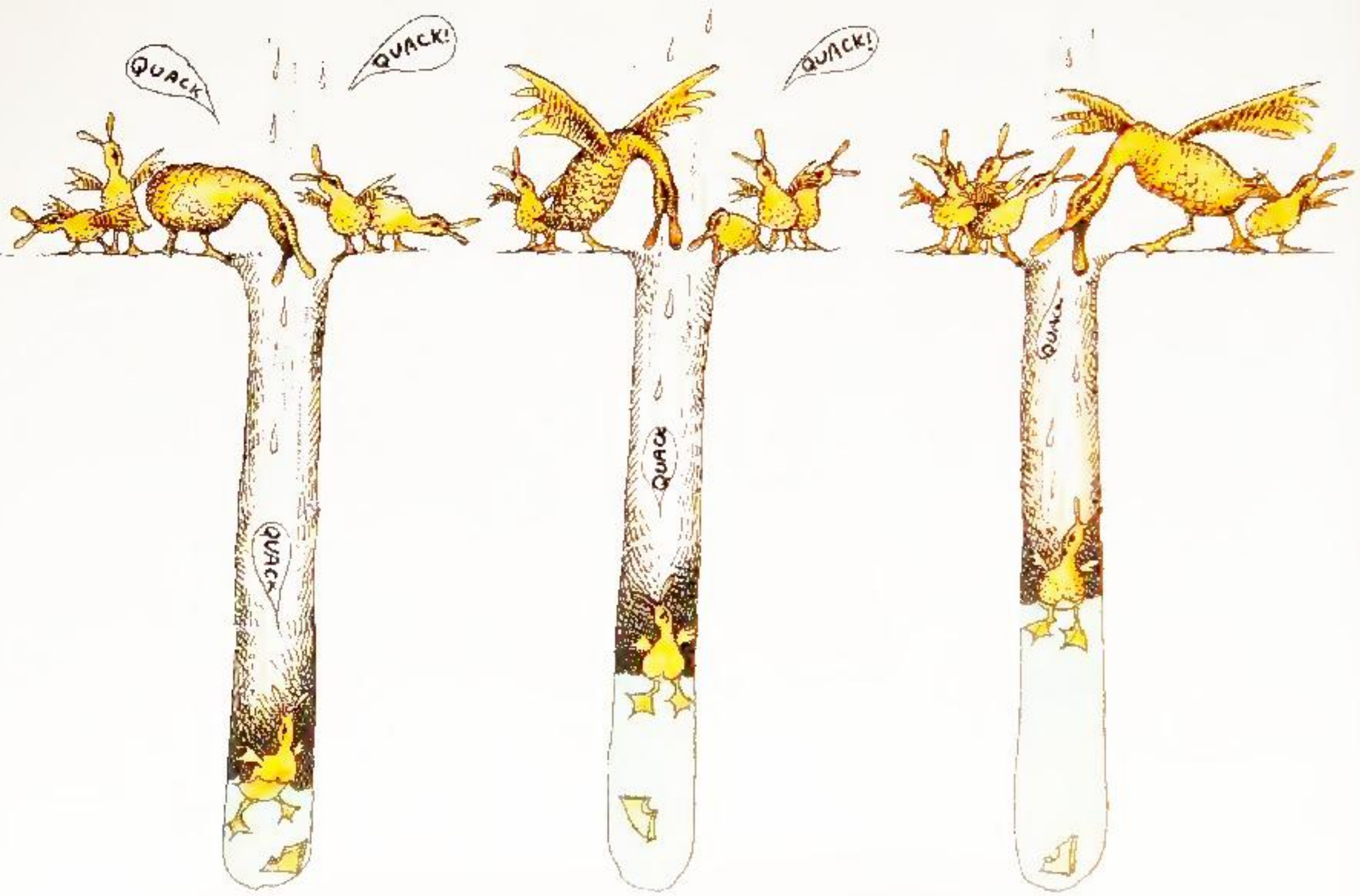


धीरे-धीरे पानी ऊपर उठता गया...

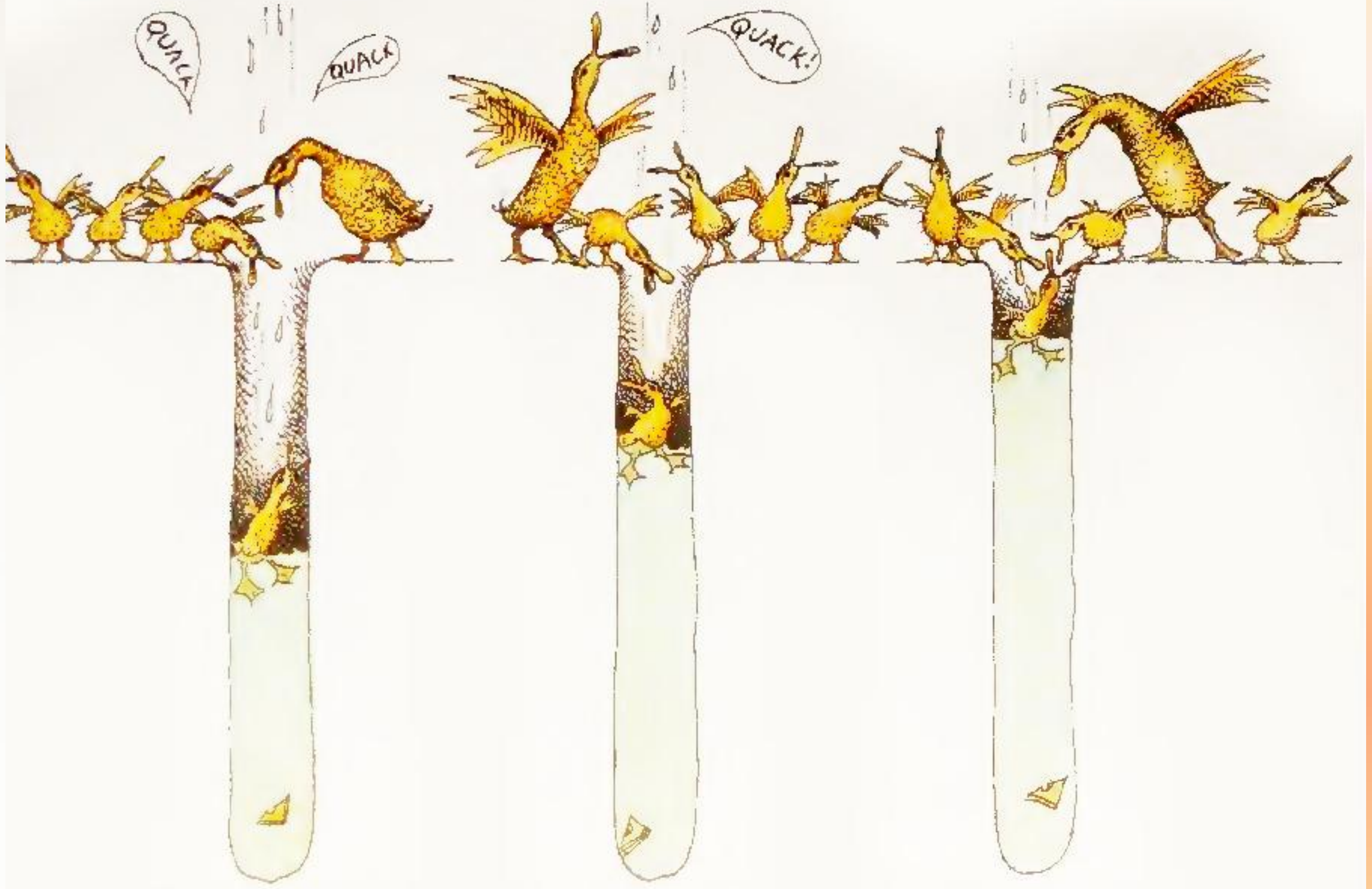


ऊपर, ऊपर, ऊपर... जब तक...

कि बोतल से कॉर्क की तरह एलेक्ज़ेंडर बाहर निकल आया।

उसकी माँ ख़ुशी में क्वेक, क्वेक करते हुए अपने पंख फड़फड़ाती रही, फड़फड़ाती रही, क्वेक, क्वेक करती रही, क्वेक, क्वेक करती रही, और उसके सभी भाई-बहन अपने पंख फड़फड़ाते रहे, फड़फड़ाते रहे, क्वेक, क्वेक करते रहे, क्वेक, क्वेक करते रहे।

कितनी ख़ुशी की क्वेक, क्वेक!

कितनी ख़ुशी से फड़फड़ाहट!

जब जश्न खत्म हो गया तो वे अभी भी पंख फड़फड़ाते हुए क्वेक, क्वेक करते हुए वापस चल पड़े।

“कॉलेज रोड” से “आर्ट गैलरी रोड” होते हुए,

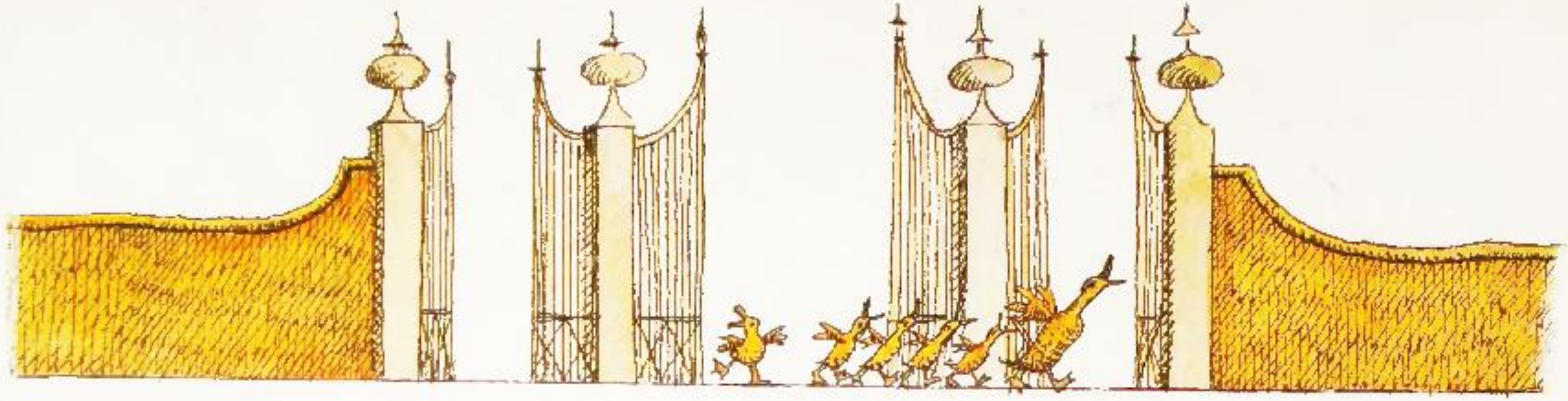

लोहे का दरवाजा पार कर

बोतल के पेड़ के साथ से गुजरते हुए,

वह सब चाय के समय तक सुरक्षित घर पहुँच गए।
‘क्वैक! क्वैक! क्वैक!’